परमात्मा को सन्मुख अनुभव करने की इच्छा हुई पूरी

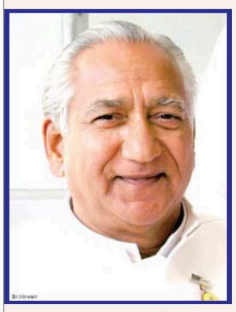

ब्र.कु.निर्वैर

भारत वर्ष अहिंसा व त्याग प्रधान देश है, इसके कण-कण में अध्यात्म की उज्जवल ज्योति विकीर्ण है। यहां की भूमि मानवीय विशेषताओं की रत्नगर्भा भूमि है। समय-समय पर विविधानेक दिव्यात्माओं ने जन्म लेकर अपने जीवन को सार्थक तो किया ही है, साथ ही उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले अन्यान्य व्यक्तियों के जीवन को भी आलोकित किया है। उन्हें सत्य का मार्ग दिखाकर मानव जीवन की दुर्लभताओं से परिचित कराया है। गुलाब का फूल कांटों में जन्मा होता है, उसी प्रकार महान पुरुषों का जीवन भी कांटों के बीच खिला गुलाब है। गुलाब का काम है सुगंध विकीर्ण करना। ब्रह्मा बाबा का भी जीवन कांटों के बीच खिला गुलाब है। गुलाब कांटों को अपने जीवन की बाधा नहीं मानता। वह कांटों के बारे में कुछ सोचता विचारता नहीं है। गुलाब सदैव उर्ध्वमुखी होता है। वह ऊपर ही बढ़ता है। गुलाब को आपने देखा होगा, वह कभी अधोमुखी नहीं होता है। विपरीत परिस्थितियों के बीच में वह अपना पथ चुनता है। सौंदर्य और सुगंध उसका वैभव होता है। कोई उसे हार्दिकता से देखे समझे या न देखे और न समझे, उसका काम है अपनी विशेषताओं से विकसित होते रहना। वह संत संतत्व, सौम्यता और भव्यता से भरा हुआ प्रकाश स्तम्भ होता है। ऐसे सर्वगुण सम्पन्न 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा' तेजस्वी युग पुरुष थे। उनमें अलौकिक दिव्य ज्योति की अमर शिखा प्रज्वलित दिखाई देती थी। साठ वर्ष की आयु में उनके तन में परमात्मा का दिव्य अवतरण हुआ व उन्हें परमात्मा की आज्ञा व उनके कर्तव्यों का बोध हुआ। उनके जीवन में रुकावटें और बाधाओं के पहाड़ आए पर वे हिमालय की तरह अडिग अपने साधना पथ पर अग्रसर रहे। ऐसे महान प्रजापिता ब्रह्मा के स्मृति दिवस पर उन्हीं की शिक्षा व पालना में पलने वाले संस्थान के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर उनके साथ के अलौकिक अनुभवों को लेकर ओमशान्ति मीडिया से रुबरु हुए। उनके माध्यम से मिला परमात्म प्यार, उनके विश्वकल्याण के दिशानिर्देश को क्रियान्वित करने तथा शालीनता के साथ ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाने वाले साक्षात्कार के अंश यहां प्रस्तुत हैं -

यह हमारा सौभाग्य रहा कि हम 20 साल की आयु में ज्ञान लेने के लिए बॉम्बे के कोलाबा सेन्टर पर गये जहाँ उर्मिला बहन ने हमें ज्ञान दिया और बाद में दादी रतनमोहिनी, दादी पुष्पशान्ता जी ने पालना दी और एक महीने के अंदर ही वहाँ मातेश्वरी जी का आना हुआ जिनसे बहुत अच्छी ज्ञान की पालना मिली। इस बीच में बाबा के साथ पत्र-व्यवहार भी हुआ और बाबा से छः मास के बाद मधुबन में मिलना हुआ। तब से लेकर के बाबा ने हम बच्चों को जिस तरह से ईश्वरीय सेवाओं के प्रति प्रेरणाए दी वो मेरे जीवन का एक बहुत ही अनमोल अनुभव रहा है। शुरु से बाबा ने हमें सर्विसिएबुल बनाने का लक्ष्य रखा और जिसको कहा जाता है लर्निंग बाई डूइंग। बाबा का एक ईशारा था कि जब तक किसी को ईश्वरीय संदेश नहीं देते तब तक सवेरे का नाश्ता भी नहीं करना है। उस बात को ध्यान में रखते हुए हम कभी बगीचे में कभी मंदिर में कहीं न कहीं जाकर ईश्वरीय सेवा का संदेश देते रहते थे और उनमें से कोई-कोई बाबा से मिलने की इच्छा भी रखते थे। धीरे-धीरे जैसे-जैसे आगे बढ़ते रहे उसमें बाबा ने विशेष लक्ष्य दिया कि जब आप किसी बड़े व्यक्ति की सेवा करते हैं और उनको अगर वो बात अच्छी लग जाती है तो उनके द्वारा अनेकों का कल्याण होता है। उस बात को ध्यान में रखते हुए बाबा ने फरवरी 1960 में जब सोमनाथ मंदिर का मरम्मत के बाद उद्घाटन हुआ उस समय खास मुझे और रामचंद्र भाई को वहाँ जाने का इशारा दिया। उस समय बाबा स्वयं बॉम्बे में थे और हम सात दिन की छुट्टी लेकर वहाँ गये। बाबा ने अखबार में पढ़ा था कि उस कार्यक्रम में पंडित जवाहरलाल नेहरु और जामनगर के जाम साहब भी होंगे। बाबा ने उनके लिए विशेष रुप से यज्ञ की तरफ से एक सच्ची गीता की अंग्रेजी में पुस्तक और साथ में प्रसाद के रुप में ड्राई-फ्रूट्स का पैकेट दिया था। उन दिनों सिक्यूरिटी की बात या पंडित जी से मिलने के लिए कोई बंधन नहीं होता था। बहुत सहज रीति से हम उदघाटन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और उनका भाषण सुना और उसके बाद स्टेज पर जाकर उनको ईश्वरीय संदेश के साथ सच्ची गीता की पुस्तक और प्रसाद भी उनको भेंट किया और उस समय जाम साहब ने बड़े प्यार से पिताश्री ब्रह्मा बाबा के स्वास्थ्य के बारे में हमसे बातचीत की क्योंकि जाम साहब की धर्मपत्नी सिरोही की प्रिंसेस थी और उनका सिरोही आना-जाना होता था तो उनकी सेवा हमारी बड़ी बहनों के द्वारा होती थी। जिसके कारण जाम साहब को भी बाबा का परिचय था। इस तरह से बाबा ने शुरुआत की और बाद में बाबा का विशेष दो-तीन बातों पर ईशारा मिलता था। एक तो बॉम्बे में होने के कारण देश-विदेश के जो प्रतिष्ठित व्यक्ति भारत में आते थे तो उनके बारे में न्यूज पेपर में छपता था तो बाबा ने कहा आप बच्चों को विशेष इस ख्याल से कि उनको संदेश देना है इसलिए न्यूज पेपर देखना चाहिए और उनके कोई कार्यक्रम हों तो उसमें जाना चाहिए, उनसे संपर्क करके उनको सेवाकेन्द्र पर बुलाना चाहिए और उनको कोई ईश्वरीय साहित्य भेंट करना चाहिए तो इस तरह की सेवा कि प्रेरणा बाबा ने दी। दूसरा बाबा को लगता था कि अगर न्यूज पेपर के जो एडिटर, असिस्टेंट एडिटर, चीफ रिपोर्टर आदि हैं उनकी अगर सेवा की जाए और उनको अगर ज्ञान की बातें अच्छी लगेंगी तो वे अनेकों की सेवा के निमित्त बनेंगे। क्योंकि कहा जाता है कि तलवार के अंदर उतनी ताकत नहीं है जितनी ताकत कलम के अंदर है। उस हिसाब से मैं हर सप्ताह दो बार ऐसे न्यूज पेपर्स के एडिटर्स जैसे टाइम्स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस तथा अन्य कुछ न्यूज पेपर्स के एडिटर्स, मुख्य कार्यकर्त्ता आदि से समय प्रति समय मिलता रहता था और उनके साथ बहुत अच्छा एक परिचय होता गया और उनका सहयोग मिलता रहा। उस समय बॉम्बे में एक छोटा अखबार हिन्दी में छपता था उनके एडिटर भी बाबा से मिलने के लिए खास आये थे और बाबा भी उनसे बहुत प्यार से मिले और ईश्वरीय सौगात के रुप में साहित्य भी भेंट किया और साथ में जो हमारे ज्ञान के चित्र हैं त्रिमूर्ति, गोला और कल्पवृक्ष वो चित्र भी उनको भेंट किए और फिर एडिटर साहब इतने प्रभावित हुए कि बाद में उन्होंने हमारे कई कार्यक्रम, प्रदर्शनी आदि के बारे में लेख लिखा। तीसरा बाबा को लगता था कि जो सेन्टर्स नये खुलते हैं वहाँ पर बाबा एक सौगात के रूप में बहुत अच्छे हाथ के पेन्ट किए हुए चित्र त्रिमूर्ति, गोला, कल्पवृक्ष, श्री लक्ष्मी-नारायण, सीढ़ी ये सब भेंट करना चाहते थे तो ये चित्र बहुत अच्छे आर्टिस्ट के द्वारा चार फुट की साइज के बनवाये जाते थे और भिन्न-भिन्न सेन्टर्स चाहे बॉम्बे चाहे गुजरात वो भेंट किए गए थे। आर्टिस्टों की तथा जहाँ पर साहित्य छपता है उनकी सेवा के लिए भी बाबा की बहुत प्रेरणा रहती थी। तो भाव यह है कि ब्रह्मा बाबा को एक विशेष बात जो उन्होंने कई बार अपने मुखारविंद से मुरली के द्वारा अपने बच्चों को बताई कि ऐसी सेवा करो कि जो आप एक व्यक्ति की सेवा करते हो वो निमित्त बने अनेक आत्माओं के कल्याण के लिए। इस लक्ष्य को लेकर के बहुत सुन्दर-सुन्दर अनुभव होते रहे। बड़े-बड़े वी.आई.पीज़ और ऑल इंडिया रेडियो तथा न्यूज पेपर के एडिटर्स और मैगज़ीन के एडिटर्स की भी बहुत अच्छी सेवा हुई और इसके साथ बाबा को ये भी लगता था कि बड़े-बड़े संत, मठाधीश की भी सेवा करने से उनको भी ईश्वरीय ज्ञान का परिचय मिलेगा और उसी लक्ष्य से अधिकतर हमारा मिलन उस समय स्वामी चिन्मयानंद जी से तथा कुछ ऐसे और आत्माओं से हुआ था और उनकी सेवा के फलस्वरूप भी अनेक आत्माओं को बाबा का संदेश पहुँचा।

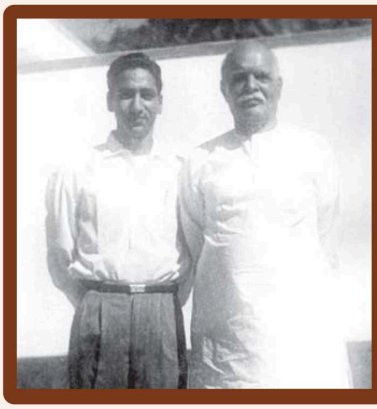

मैं अपने मन को सदा ही हल्का रखता हूं क्योंकि मैंने अपने मन में यह स्वीकार किया हुआ है कि यह कार्य किसी व्यक्ति का नहीं है ये परमपिता परमात्मा का कार्य है जिन्होंने ब्रह्मा बाबा को निमित्त बना के इस महान यज्ञ की स्थापना की और इसको बहुत ही सुचारु रूप से चलाया। और बाद में दादी प्रकाशमणि द्वारा तथा अब दादी जानकी तथा दादी गुलजार जी के द्वारा इतने सुंदर ढ़ंग से चला रहे हैं हम तो बाबा की श्रीमत को आगे रखते हुए उसी अनुसार चलते रहते हैं और बड़ा ही उसमें आनंद आता है तथा निमित्त भाव से अपना कार्य करते हैं।

प्रश्नः पहली बार जब आपने ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा की अनुभूति की उस अलौकिक अनुभव के बारे में बताएं?

उत्तरः पहली बार का तो मेरा एक लक्ष्य यही था कि जो बाबा हमें पत्र लिखते थे और मुरली भी हम उनके द्वारा शिवबाबा की सुनते थे तो मेरी ये हार्दिक इच्छा थी कि मैं जब बाबा के पास जाऊं तो मुझे शिवबाबा का सन्मुख अनुभव होना चाहिए और इसी लक्ष्य से हम जब 13 जुलाई 1959 को माऊंट आबू पहुँचे और बाबा से मिलने गये तो बाबा और मम्मा गद्दी पर बैठे हुए थे। हम उनके सम्मुख जाकर बैठे और बाबा ने साइलेंस में हमें दृष्टि दी और दृष्टि देते-देते मेरी जो इच्छा थी वो मुझे प्रैक्टिकल में अनुभव कराया। बाबा के मस्तक पर शिव बाबा की लाइट का दिव्य साक्षात्कार हुआ और मैं दस मिनट तक बाबा से इतनी प्यार भरी दृष्टि जिसमें वो शान्ति, शक्ति और आत्म-अनुभूति हुई जिसके बारे में मैंने पढ़ा भी था और जो मेरी इच्छा भी थी उसका बहुत सुन्दर अनुभव हुआ और उससे ही मैंने अन्दर ही अन्दर ये निश्चय किया कि बाबा आज से मेरा जीवन आपकी ईश्वरीय सेवा के लिए रहेगा और बाबा ने मन ही मन जैसे मेरी बात को स्वीकार किया और मुझे गले लगाया और मुख में प्रसाद खिलाया। ये मेरे जीवन का सबसे प्रिय जिगरी अनुभव है जो मुझे कभी भूलता नहीं है और आज दिन तक भी ये मुझे प्रेरणा देता रहता है क्योंकि मैं तब से बाबा का वारिस बच्चा बन गया।

प्रश्नः पहली बार बाबा ने जब आपको माऊंट आबू में बुलाकर के ऑफिशियल कारोबार दिया और कहा कि अब आपको माऊंट आबू में ही रहना है तब इतनी व्यवस्था भी नहीं थी, उस संदर्भ में बताएं?

उत्तरः वास्तव में साकार बाबा के होते तो बाबा ने मुझे हमेशा यही कहा कि बच्चे बड़े शहरों में जो बड़े-बड़े लोग आते रहते हैं उनकी सेवा के निमित्त बनना है। क्योंकि माऊंट आबू में तो भील और गरासिये आदि हैं केवल सीज़न में ही

-शेष पेज 8 पर